Orchid

OSR SERIES

धरा

हिंदी व्याकरण

उत्तर पुस्तिका 7

Orchid Publications (P) Ltd.

पाठ 1 भाषा, लिपि, बोली और व्याकरण

(1) (क) उत्तर भारत के सभी राज्य। (ख) तमिलनाडु
(ग) केरल, गोवा आदि।

(2) (क) ब (ख) स (ग) स (घ) स

(3) कन्नड़ – कर्नाटक तेलुगू – आंध्र प्रदेश मलयालम – केरल
उड़िया – उड़ीसा तमिल – तमिलनाडु मराठी – महाराष्ट्र

(4) (क) भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा हम बोलकर, सुनकर, पढकर या लिखकर अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

(ख) भाषा के जिस रूप से मन के भावों और विचारों का आदान-प्रदान बोलकर और सुनकर किया जाता हैं, उसे मौखिक भाषा कहते हैं जबकि जिस रूप से मन के भावों और विचारों का आदान-प्रदान लिखकर और पढ़कर किया जाता है उसे लिखित भाषा कहते हैं।

(ग) 14 सितंबर, 1949 को संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी को भारत की राज्यभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गई इसलिए प्रतिवर्ष 14 सितंबर का दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

(घ) भाषा के स्थानीय रूप या क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। भारत की कुछ बोलियाँ हैं- जयपुरी (ढुँढाड़ी), मेवाती, बाँगरू (हरियाणवी) अवधी, भोजपुरी, गढ़वाली आदि।

(ङ) व्याकरण वह शास्त्र है जो भाषा के वर्णों, शब्दों और वाक्यों का शुद्ध बोलना, पढ़ना और प्रयोग करना सिखाता हैं। इस प्रकार व्याकरण भाषा के मौखिक तथा लिखित रूपों का शुद्ध ज्ञान कराता है अतः इसका अध्ययन अत्यावश्यक है।

(5) देशी भाषा – उड़िया, गुजराती, कश्मीरी, असमिया, मराठी, तमिल, कन्नड़, बांग्ला, मलयालम,
विदेशी भाषा – अंग्रेजी, अरबी, फ्रेंच, फ़ारसी
बोली – ब्रज, अवधी

पाठ 2 वर्ण विचार

(1) (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗

(2) (क) अंतस्थ (ख) दो (ग) ह्रस्व (घ) प्लुत (ड़) दो

(3) द्य – खाद्य, विद्या द्ध – संबंद्ध, बुद्ध त्त- सत्ता, पत्ता स्व- राजस्व, स्वस्थ
व्य – तालव्य, व्यय क्व – परिपक्व, क्वाथ च्च- उच्च, समुच्चय ट्ठ- लट्ठा, मट्ठा

(4) (क) पंजाब, बंगाल, चंदा (ख) प्रातः, अतः, प्रायः (ग) चाँद, हँस, मुँह

(5) ब्रः = ब् + र् – ब्रज क्रः = क् + र् – चक्र भ्रः = भ् + र् –शुभ्र पर्ः = र् + प् – दर्पण
र्दः = र् + द् – दर्द द्रः = द् + र् – भद्र हः = ह् + र् – हृदय

(6) क् + त – शक्ति, भक्ति ह् + ल – चहल, आह्लाद क् + ष – पंक्षी, चक्षु
श् + र – मिश्र, श्रेय ज् +ञ – संज्ञा, ज्ञान थ् + य – कथ्य, नेपथ्य
द् + धा – संबंद्ध, प्रतिबद्ध द् + व – दिव्तीय, दिव्वेदी द् + य – गद्य, पद्य
त् + र – पत्र, चित्र

(7) (क) (i) (ख) (iii) (ग) (iii) (घ) (i)

(8) सबसे छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है।

(ख) स्वरों के तीन भेद – ह्रस्व स्वर, दीर्घ स्वर और प्लुत स्वर हैं सबसे कम समय में उच्चरित स्वर ह्रस्व स्वर, ह्रस्व से लगभग दुगने समय में बोले जाने वाले स्वर, दीर्घ स्वर और ह्रस्व से तीन गुने समय में बोले जाने वाले स्वरों को प्लुत स्वर कहते हैं। अ, ई, उ, तथा ऋ ह्रस्व स्वर हैं। आ, ई, उ, ए, ऐ, ऑ, ओ, औ, दीर्घ और ओउम, हरी,आदि प्लुत स्वर हैं।

(ग) जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है तथा उच्चारण के समय वायु घर्षण के साथ मुँह से बाहर निकलती हैं, वे व्यंजन कहलाते हैं जैसे- वर्णमाला के 'क' से 'ह' तक के वर्ण। व्यंजन के तीन भेद होते हैं- स्पर्श व्यंजन, अंतस्थ व्यंजन और स्पर्श व्यंजन। इनके अतिरिक्त संयुक्त और दिव्तीय व्यंजन भी है।

पाठ 3 संधि

(1) (क) दयानंद (ख) स्वार्थ (ग) तथैव (घ) उपर्युक्त (ङ) पवित्र

(2) (क) अनु + एषण – यण संधि (ख) राजा + इंद्र – गुण संधि (ग) नै + इका – अयादि संधि

(3) महात्मा, रवींद्र, सूर्योदय, पवन, यशोदा, निष्पाप, भावुक, प्रत्येक, सदैव, नयन, अनुच्छेद, महोत्सव नरेश, सदगति

(4) (क) अनु + छेद – अनुच्छेद लेखन में मुझे अच्छे अंक मिले।
(ख) नै + अन – ममता माँ के नयनों में झलक जाती है।
(ग) पर + अधीन – पराधीन सपने में भी सुखी नहीं होता है।
(घ) सु + अच्छ – वातावरण को स्वच्छ रखना आवशयक है।
(ड़) सु + आगत – अतिथि का स्वागत प्रेम पूर्वक करना चाहिए।
(च) उत् + लेख – गीता में कर्म का उल्लेख किया गया है।

(5) (क) (i) (ख) (i) (ग) (ii) (घ) (i)

(6) (क) दो शब्दों में दो वर्णों के मेंल से जो परिवर्तन होता हैं, उसे संधि कहते हैं। जैसे– विद्या + अर्थी – विद्यार्थी। यहाँ विद्या की अंतिम ध्वनी 'आ' और अर्थी की प्रथम ध्वनी 'अ' के मेल से 'आ' हो गया है।
(ख) संधि के तीन भेद हैं– स्वर संधि, व्यंजन संधि और विसर्ग संधि।
(ग) संधि शब्दों को अलग–अलग करके दर्शाना, संधि विच्छेद कहलाता है।

पाठ 4 शब्द विचार

(1) (क) स (ख) अ (ग) द (घ) स

(2) (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓ (च) ✓

(3) **रूढ़:**– लंगूर, पुस्तक, दीवार, पेड़
यौगिक:– नरेश, विद्यालय, सूर्योदय, परोपकार
योगरूढ़:– पंकज, नीलकंठ, दशानन, चतुर्भुज

(4) **तत्सम:**– रात्रि, हस्त, चर्म, स्कंध, पितृ **तद्भव:**– दूध, चमड़ी, सूत, पतीली, उजाला,
देशज:– अम्मा, खटिया, बिंदी, पगड़ी, घाघरा **विदेशी:**– ड्राइवर, गैस, कैंची, कारीगर

(5) (क) आम्र, मयूर, दिवस (ख) आम, मोर, दिन
(ग) कैंची, कूच, कुली (घ) टिकट, स्टेशन, बोतल (ङ) कमरा, कमीज, कारतूस

(6) (क) वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं। जैसे– क+म+ल –कमल, यह शब्द है क्योंकि इसका अर्थ है, परंतु म+क+ल – मकल शब्द नहीं है क्योंकि इसका कोई अर्थ नही।
(ख) उत्पति के आधार पर शब्द के चार भेद हैं–
(क) तत्सम शब्द (ख) तद्भव शब्द (ग) देशज शब्द (घ) विदेशी।
(ग) प्रयोग के आधार पर शब्द के दो भेद हैं–
(क) विकारी शब्द (ख) अविकारी शब्द

(7) **तत्सम** – रात्रि, मित्र, तृण, मक्षिका, वृक्ष **तद्भव** – कोयल, भालू, उल्लू, सौ

पाठ 5 समास

(1) (क) स (ख) ब (ग) स (घ) ब

(2) (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓ (च) ✓

(3) रसोईघर : – रसोई के लिए घर – तत्पुरुष दशानन : – दस आनन हैं जिसके – बहुब्रीहि
प्रत्येक :– एक एक – अव्ययीभाव रात–दिन :– रात और दिन – द्वंद्व
त्रिकोण:– तीनों कोणों का समूह – द्विगु गुणहीन :– गुण से रहित – तत्पुरुष
नवरात्र :– नौ रात्रियों का समूह – द्विगु पीतांबर :– पीला है जिसका अंबर – बहुब्रीहि
सज्जन:– सत् है जो जन – कर्मधारय आमरण :– मरण तक – अव्ययीभाव

(4) (क) चतुर्मुख – बहुब्रीहि समास (ख) रातोंरात – अव्ययीभाव समास (ग) घनश्याम – बहुब्रीहि
(घ) पंकज – तत्पुरुष (ङ) विधर्मी – तत्पुरुश (च) घुड़सवार– तत्पुरुष

(5) घनश्याम – कर्मधारय आजन्म – अव्ययीभाव पीतांबर – बहुब्रीहि
माता–पिता – द्वंद्व यज्ञशाला – तत्पुरुष भरपेट – अव्ययीभाव

(6) (क) जब आपस में संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक शब्द बनाते हैं; तो इस प्रक्रिया को समास कहते हैं। जैसे– आप पर बीती – आपबीती, देश का प्रेमी – देशप्रेमी

(ख) समास के छह: भेद होते हैं- (क) अव्ययीभाव समास (ख) द्विगु समास (ग) तत्पुरुष
(घ) द्वंद्व समास (ङ) कर्मधारय समास (च) बहुव्रीहि समास

(ग) तत्पुरुष समास में दूसरा पद प्रधान होता है और समास के कारकों की विभक्तियों का लोप होता है। जैसे- वनवास - वन में वास, तुलसीकृत - तुलसी द्वारा कृत

(घ) समस्त पदो के खंड करके उनको फिर से अलग-अलग दिखाने की प्रक्रिया को समास-विग्रह कहा जाता हैं। जैसे- पूजाघर - पूजा के लिए घर, रात-दिन -रात और दिन

भाषा खेल

(1) **ऊपर से नीचे** - 1. गुजराती 4. मलयालम 7. पुस्तक 8. तमिल
बाएँ से दाएँ - 1. गुरूमुखी 3. मराठी 5. असमिया 6. मणिपुरी 8. बातचीत

पाठ 6 उपसर्ग – प्रत्यय

उपसर्ग

(1) **औ**- औगुण, औचह **अति**- अत्याचार, अत्यधिक **उत्**- उत्साह, उत्कर्ष
निर्- निर्गुण, निर्बल **ना**- नालायक, नाकामयाब **उप**- उपवास, उपस्थित
अभि- अभिमान, अभिलाषा **प्रति**- प्रत्येक, प्रतिकूल **गैर**- गैरजिम्मेदार, गैरकानूनी
कम- कमअक्ल, कमजोर **पर**- परस्त्री, परश्रित **अधा**- अधमरा, अधपका

(2) (क) पुन: + जन्म (ख) चौ + पाया (ग) सत् + पथ (घ) अध: + गति

(3)

उपहार	विवाह	सुकर्म	आचरण
अनीति	सतकर्म	अपमान	निश्छल
कुविचार	अधोगति	सदगति	अनावश्यक जनता

(4) जो शब्दांश शब्दों से पूर्व जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं। जैसे 'हार' शब्द से पहले 'उप' लगाकर नया शब्द 'उपहार' बना जिसका अर्थ हार शब्द से सर्वथा भिन्न है।

प्रत्यय

(1) (क) ब (ख) स (ग) अ (घ) अ (ड़) ब

(2)

मूल शब्द	**प्रत्यय**
विज्ञान	इक
सुंदर	ता
चाचा	एश
लेख	अक
दुकान	दार
पीना	अक्कड़
घबरा	आहट

(3) बूढ़ा + आपा - बुढ़ापा, पुराण + इक - पौराणिक, लाल + इमा - लालिमा,
रसोई + इया - रसोइया सेवा + अक - सेवक, भूल + अक्कड़ - भुलक्कड़,
लोहा + आर - लोहार, नौकर + आनी - नौकरानी खेल + आड़ी - खिलाड़ी,
अध्यापक + इका - अध्यापिका

(4) त्व - महत्व, प्रभुत्व, आलु - दयालु, कृपालु ता - कठोरता, मधुरता,
ना - खाना, ओढ़ना, इया - रसोइया, कुटिया ईला - चमकीला, रंगीला
कर - लिखकर, सोकर वाला -फलवाला, सब्जीवाला नी - ओढ़नी, सूँधनी
वान् - दयावान्, भगवान्

(5) ऐसे शब्दांश जो शब्दों के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, प्रत्यय कहे जाते हैं। प्रत्यय के दो भेद हैं- 1. कृत् प्रत्यय और 2. तद्धित प्रत्यय

पाठ 7 शब्द – भंडार

(क) विलोम या विपरीतार्थक शब्द

(1) (क) प्रस्थान (ख) भोगी (ग) अंत (घ)श्यामा (ङ) मूर्ख (च) परोक्ष (छ) हर्ष (ज) विषम

(2) स्वामी – सेवक, पुराना – नया, प्रातः – सायं, मितव्ययी – अपव्ययी, क्रय – विक्रय, बंधन – मोक्ष, बाह्य – आंतरिक पाप – पुण्य

(3) (क) विक्रय (ख) अनुचित (ग) अभिशाप (घ) कुटिलता (ङ) सभ्य (च) कठोर (छ) घृणा (ज) उदय (झ) अमृत (ञ) परतंत्र (ट) परोक्ष (ठ) सृजन

(4) आहार – निराहार सुगम – दुर्गम, वसंत – पतझड़, सफल – विफल मनुष्य – पशु जीवन – मृत्यु

(ख) पर्यायवाची शब्द

(1) नदी – भागीरथी, पुष्प – धरा, सूर्य – रजनी, स्त्री – प्रभा, अश्व– चाकर, मित्र – पयोद, साँप – हस्ती निर्मल – दरिद्र चतुर – रसिक दिन – साथ

(2) किरण– अंश, मयूख, रश्मि गंगा– भागीरथी, देवनदी, मंदाकिनी दिन– दिवस, वासर, वार
नारी– स्त्री, औरत, महिला पेड़– वृक्ष, पादप, माता– माँ, जननी, धात्री
मित्र– सखा, साथी, सहचर

(ग) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

(1) (क) निष्पक्ष (ख) अद्‌वितीय (ग) सर्वज्ञ (घ) साप्ताहिक (ङ) अगम्य
(च) प्रत्यक्ष (छ) यादगार (ज) गोपनीय (झ) अनुभूत

(2) (क) जिसकी कोई उपमा न हों। (ख) नभ में विचरण करने वाला (ग) मृग के जैसे नयनों वाली
(घ) शाक–सब्जी खाने वाला (ङ) बहुत अधिक बोलने वाला

(घ) एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

(1) (क) न्याय (ख) शोक (ग) कृपा (घ) पुस्तक (ङ) संदेश (च) साहस
(छ) वध (ज) भूल (झ) प्रवाह (ञ) अचार

(2) (क) मैं अपने शिक्षक पर बहुत श्रद्‌धा रखता हूँ।, हमें नित्य ईश्वर की भक्ति करनी चाहिए।
(ख) मेट्रो सेवा में विलंब होने पर विभाग ने खेद प्रकट किया।,
स्वर्गीय सुजाता शर्मा की मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया।
(ग) विक्रमादित्य न्याय के लिए प्रसिद्‌ध थे।,
समय पर लिया गया सही निर्णय मनुष्य का भाग्य बदल देता है।
(घ) पापी को पाप का फल भुगतना ही पड़ता हैं।,
न्यायाधीश ने हत्यारे को कठोर कारावास की सजा सुनाई।
(ङ) मीरा कृष्ण के प्रेम में पागल थी।, मैं अपने छोटे भाई–बहन पर बहुत स्नेह रखता हूँ।
(च) लोभ मनुष्य को गलत कामों के लिए उकसाता है।, तृष्णा मनुष्य को आजीवन मटकाती हैं।
(छ) पत्नी से ही घर–घर कहलाता है।, जहाँ स्त्री की पूजा होती है वहाँ देवताओं का निवास होता हैं।
(ज) लज्जा नारी का गहना है।, अपनी गलती का अहसास होने पर बहुत ग्लानि होती है।

(ङ) श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

(1) (क) परिमाण, परिणाम (ख) शाम, श्याम (ग) और, ओर (घ) चालक, चालाक

(2) (क) श्याम ने कपट से अपने मित्र का धन हथिया लिया।, घर के कपाट बंद कर दो।
(ख) बुरी नीयत का परिणाम बुरा ही होता हैं।, नियत समय पर काम करना ही लाभप्रद होता है।
(ग) रस्सी पर नट के करतबों को रामू विस्मय से देखता रहा।, विषम फल खाकर राक्षस की मृत्यु हो गई।
(घ) किसी भी प्रकार की अति कष्ट प्रद होती हैं।, नाटक की इति सुखद थी।

पाठ 8 संज्ञा

(1) यौवन – भाववाचक संज्ञा, मदर टरेसा – व्यक्तिवाचक संज्ञा, झुंड – जातिवाचक संज्ञा
मिठास – द्रव्यवाचक संज्ञा, मंदिर – जातिवाचक संज्ञा कवित्व – भाववाचक संज्ञा

(2) (क) महात्मा गाँधी (ख) खटास (ग) तोता

(3) (क) सरलता (ख) सफलता (ग) तप (घ) खान–पान (ङ) ऊपरी

(4)

महात्मागाँधी	भगत सिंह	कुतुबमीनार	रानी मुखर्जी
नेता	क्रांतिकारी	मीनार	अभिनेत्री
सच्चाई	वीरता	ऊँचाई	सौदंर्य

(5) दूरी, स्वास्थ्य, चतुराई, जीत, लेन–देन, सरलता, राष्ट्रीय, पड़ता, शिक्षा, बालपन, अहंकार, निजता, मनाही, शीघ्रता, भय,

(6) (क) किसी वस्तु, व्यक्ति, प्राणी, स्थान, गुण अथवा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द को संज्ञा कहते हैं।

(ख) संज्ञा के मुख्य रूप से तीन भेद हैं– (क) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ख) भाववाचक संज्ञा (ग) जातिवाचक संज्ञा

(ग) किसी व्यक्ति–विशेष अथवा वस्तु–विशेष का बोध कराने वाले शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं, जैसे– ताजमहल, जवाहर लाल नेहरू आदि।

(घ) जिन संज्ञा शब्दों से एक ही प्रकार के या एक जैसे प्राणियों, व्यक्तियों, स्थानों या वस्तुओं का बोध होता हैं, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे– घोड़ा, हाथी, कलम, कॉपी आदि।

(ङ.) जो संज्ञा शब्द किसी वस्तु, व्यक्ति के गुण–दोष, भाव–दशा, अवस्था तथा स्वभाव आदि का बोध कराते हैं, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहा जाता है।

पाठ 9 संज्ञा विकार : लिंग

(1) (क) पुल्लिंग (ख) पुल्लिंग (ग) स्त्रीलिंग (घ) पुल्लिंग

(2) (क) पुल्लिंग (ख) पुल्लिंग (ग) पुल्लिंग (घ) स्त्रीलिंग (ङ) पुल्लिंग

(3) (क) पुल्लिंग (ख) पुल्लिंग (ग) स्त्रीलिंग (घ) स्त्रीलिंग

(4) **पुल्लिंग:**– लहू, साहस, जीवन, अखबार, स्वास्थ्य, चेहरा, हवाई–अड्डा, मौका
स्त्रीलिंग:– सलाह, दीवार, जेल, तैराकी, संस्कृत

(5) (क) बिलार ने चुहिया पकड़ ली, (ख) वह बालिका मूर्ख है। (ग) ग्वालिन दूध ले जा रही हैं। (घ) आजकल की युवतियाँ बहुत फैशन करती हैं।

(6) (क) मैं मलाई नहीं खाती। (ख) मनोज कायर है। (ग) पौष्टिक भोजन से ताकत मिलती हैं। (घ) अधिक मीठा खाने से मोटापा बढ़ता हैं।

(7) नित्य पुल्लिग– पिता, चाचा, दादा, हाथी, घोड़ा
नित्य स्त्रीलिंग:– गाय, हथिनी, दादी, माँ, चाची, आदि।

(8)

पंड़िताइन	हलवाइन	चौबाइन
बालिका	कालिका	तालिका
काला	छात्रा	शिष्या
घबराहट	फुसफुसाहट	बड़बड़ाहट

(9) (क) पुरुष व स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द को लिंग कहते हैं। इसके दो भेद हैं।–स्त्रीलिंग व पुल्लिग।
(ख) पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिग कहलाते हैं। जैसे:– बैल, पिता, भाई, हाथी, दादा आदि।
स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं, जैसे– गाय, माता, चाची आदि।

पाठ 10 संज्ञा के विकार : वचन

(1) (क) कुटियाँ (ख) गौएँ (ग) सलवारें (घ) जूते (ङ) नदियाँ

(2) (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ड़) ✗

(3) (क) मेजें (ख) तोता (ग) तिलियाँ (घ) वस्तुएँ (ङ) युवावर्ग

(4) **वधूः**– वधू को बेटी के समान ही सम्मान देना चाहिए। **वधुएँः**– वधुएँ ससुराल की इज्जत होती हैं।
नारीः– जहाँ नारी का सम्मान है वहीं ईश्वर बसता है।
नारियाँः– गाँव में नारियाँ कुएँ से पानी भरकर लाती हैं।
चिड़ियाः– चिड़िया दाना खाती है।
चिड़ियाः– चिड़ियाँ सुबह–सुबह दाने की तलाश में निकल पड़ती हैं।

(5) (क) शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का पता चलता है उसे वचन कहते हैं।
जैसे– चिड़िया उड़ गई / 'चिड़ियाँ उड़ गईं में 'चिड़ियाँ' एक तथा 'चिड़ियाँ' अनेक होने का बोध करा रहे हैं। अतः स्पष्ट हैं कि किसी भी शब्द के रूप से उसके एक या अधिक होने का पता चलता है। इसी को वचन कहते हैं।

(ख) जिस शब्द से एक वस्तु या प्राणी का बोध होता है उसे एकवचन कहते हैं। जैसे–श्वेता ने पुस्तक खरीदी।, सभी बच्चों ने एक–एक केला खाया।

(ग) जिस शब्द से एक से अधिक वस्तुओं या प्राणियों का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे– मेज पर पुस्तकें रखी हैं।, मैनें केले खरीदें।

भाषा–खेल

सुगम, नालायक, अधपका, पुनर्जन्म, प्रबल, दुर्बल, प्रभाव, आजीवन, निस्संदेह, पराधीन, अधिसार, उनसठ

पाठ 11 संज्ञा के विकार : कारक

(1) (क) के (ख) में (ग) वाह! (घ) से (ङ) का

(2) (क) अधिकरण (ख) कर्म (ग) करण (घ) संबंध (ङ) संप्रदान

(3) (क) करण कारक (ख) कर्म कारक (ग) करण कारक (घ) अधिकरण कारक
(ङ) अपादान कारक (च) अधिकरण कारक (छ) संबोधन कारक

(4) (क) राम ने केला खाया। (ख) मोहन ने सोनू को मारा। (ग) मैंने पेंसिल से उत्तर लिखा।
(घ) मधु ने नेहा को पेन दिया। (ङ) पेड़ से पत्ते गिरते हैं। (च) यह मेरी कलम है।
(छ) सोहन नदी में नहा रहा है। (ज) अरे! बरसात शुरू हो गई।

(5)

कर्ता	ने	बालक ने
कर्म	को	बालक को
करण	से	चाकू से
संप्रदान	को, के लिए	बालक को, के लिए
अपादान	से (पृथक)	पेड़ से
अधिकरण	में, पर	तालाब में

(6) (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों विशेष रूप से क्रिया के साथ जाना जाए, उसे कारक कहते हैं। कारक आठ प्रकार के होते हैं।
(क) कर्ता कारक (ख) कर्म कारक (ग) करण कारक (घ) संप्रदान कारक
(ङ) अपादान कारक (च) संबंध कारक (छ) अधिकरण कारक (ज) संबोधन कारक
(ख) संज्ञा के जिस रूप से पुकारने, संबोधन या संके करने का ज्ञान होता है, उसे संबोधन कारक कहते हैं, जैसे–अरे! तुम कब आए?

पाठ 12 सर्वनाम

(1) (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓

(2)

हम	–	पुरुषवाचक सर्वनाम
जो–सो	–	संबंधवाचक सर्वनाम
कौन	–	प्रश्नवाचक सर्वनाम
अपने–आप	–	निजवाचक सर्वनाम
यह	–	निश्चयवाचक सर्वनाम
कोई	–	अनिश्चयवाचक सर्वनाम

(3) (क) पुरुषवाचक सर्वनाम (ख) पुरुषवाचक सर्वनाम (ग) प्रश्नवाचक सर्वनाम
(घ) प्रश्नवाचक सर्वनाम (ङ) प्रश्नवाचक सर्वनाम (च) अनिश्चयवाचक सर्वनाम

(4) (क) तुम्हारे (ख) किसका (ग) तुम्हें (घ) किसी को (ङ) मुझे

(5) (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं जैसे– मधु के पिता का नाम दिनेश है। मधु कॉलेज में पढ़ती है। मधु पढ़ाई में बहुत होशियार है। इन वाक्यो में संज्ञा शब्द मधु बार–बार आया है, नीचे इसके स्थान पर सर्वनाम इस प्रकार आएगा– मधु के पिता का नाम दिनेश है। वह कॉलेज में पढ़ती है। वह पढ़ाई में बहुत होशियार है। वह, उसका, उसने, आदि सर्वनाम हैं।

(ख) सर्वनाम के छः भेद हैं–

i पुरुषवाचक सर्वनाम:– मैं विद्यालय जाऊँगा।, तुम कहाँ हो ?

ii निश्चयवाचक सर्वनाम:– यह घर मेरा है।, वह पुस्तक तुम्हारी है।

iii अनिश्चयवाचक सर्वनाम:– दरवाजे पर कोई खड़ा है।, दूध में कुछ पड़ा है।

iv संबंधवाचक सर्वनाम:– जो करेगा, सो भरेगा।, जैसी करनी, वैसी भरनी।

v प्रश्नवाचक सर्वनाम:– बाहर कौन खड़ा है?, तुम क्या रहे हो?

vi निजवाचक सर्वनाम:– आयुष गृहकार्य स्वयं करता है।, माँ मैं अपना काम अपने आप करूँगा।

पाठ 13 विशेषण

(1) नमक– नमकीन, रंग – रंगीन, श्रद्धा – श्रद्धालु, स्थान – स्थानीय

(2) (क) अनिश्चित परिमाणवाचक (ख) परिमाणवाचक विशेषण (ग) संख्यावाचक विशेषण
(घ) सार्वनामिक विशेषण (ङ) गुणवाचक विशेषण

(3)

	विशेषण		**भेद**
(क)	धार्मिक	–	गुणवाचक
(ख)	विशालकाय	–	गुणवाचक
(ग)	चार	–	संख्यावाचक
(घ)	चार किलोमीटर	–	संख्यावाचक
(ङ)	दस मीटर	–	परिमाण वाचक
(च)	कैसा	–	सार्वनामिक विशेषण

(4) सुंदरतर – सुंदरतम, योग्यतर – योग्यतम अधिकतर – अधिकतम
कठोरतर – कठोरतम, प्राचीनतर – प्राचीनतम

(5) (क) ऐतिहासिक (ख) पौराणिक (ग) बुद्धिमति (घ) वीरांगना (ङ) पथरीला (च) राष्ट्रीय

(6) (क) किसी की मदद करके बड़ा सुखद अहसास होता है।
(ख) कुछ लोग सुंदर न होने पर भी आकर्षक होते हैं।
(ग) लक्ष्मीबाई जैसी वीरंगाना को पाकर भारत की धरती धन्य हो गई।
(घ) बूढ़ा व्यक्ति बच्चे के समान हो जाता है।
(ङ) जो किसी की मदद करता है उसे भगवान चौगुना देता है।

(7)

बड़ा हाथी	सुंदर कार	जंगली शेर
विशाल हाथी	नई कार	खूँखार शेर
ताकतव बड़ा हाथी	नीली कार	बूढ़ा शेर

(8) (क) जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषण बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है– जैसे काला घोड़ा, थोड़ा दूध, चार व्यक्ति, छः रुपये।

(ख) विशेषण जिन संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जैसे–नई कार (नई–विशेषण, कार–विशेष्य) के लिए।

(ग) जो शब्द विशेषण की भी विशेषता बताते हैं, उन्हें प्रविशेषण कहते हैं। जैसे–राधिका बहुत मोटी है। 'बहुत' प्रविशेषण है।

(घ) संख्यावाचक विशेषण– संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की संख्या का बोध कराने वाले विशेषण संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे– मेरे पास तीन पेन हैं।, मैं **नवीं** कक्षा का विद्यार्थी हूँ। यहाँ तीन, नवीं संख्यावाचक विशेषण हैं। परिमाणवाचक विशेषण– संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की माप–तौल संबंधी विशेषता का बोध कराने वाले विशेषणों को परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे–मोहन! **एक लीटर** दूध लेकर आओ।, सूट के लिए **पाँच मीटर** कपड़ा काफी होगा। परिमाण वाचक विशेषण हैं।

पाठ 14 क्रिया

(1) (क) संयुक्त क्रिया (ख) प्रेरणार्थक क्रिया (ग) पूर्वकालिक क्रिया (घ) पूर्वकालिक क्रिया

(2) (क) अकर्मक (ख) सकर्मक (ग) सकर्मक (घ) सकर्मक (ङ) सकर्मक

(3) बतियाना, ठंडाना, खटखटाना, लजाना, अपनाना, हथियाना, शर्माना, थपथपाना

(4)

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
लिखना	लिखाना	लिखवाना
उड़ना	उड़ाना	उड़वाना
धोना	धोना	धुलवाना

(5) (क) जो शब्द किसी कार्य के करने या होने का बोध कराते हैं उन्हें क्रिया कहते हैं। जैसे – सोनू पढ़ रही है (करने का), बारिश हो रही हैं।(होने का)

(ख) कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद है।– सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया

(ग) जिन क्रियाओं का कर्म होता हैं और क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे– रेखा टेलीविज़न देख रही है टेलीविज़न कर्म है क्रिया की पहचान करने के लिए क्रिया के साथ क्या किसको लगाने से यदि उत्तर मिल जाता हैं तो वह सकर्मक होती हैं। जैसे क्या पढ़ रहा है का उत्तर है अखबार पढ़ रहा है।

(घ) जिस वाक्य की क्रिया को कर्म की आवश्यकता नहीं होती उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। परतुं जिन क्रियाओं का कर्म होता हैं और क्रिया का फल कर्म पर पड़ता हैं उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं जैसे– अंशु नाच रही हैं (अकर्मक), राजेश अखबार पढ़ता है। (सकर्मक)

पाठ 15 काल

(1) (क) क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि क्रिया किस समय हुई है, उसे क्रिया का काल कहते है।

(ख) क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया वर्तमान मे हो रही है,उसे वर्तमान काल कहते है। जैसे– श्याम खाना खा रहा है।

(ग) क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि काम बीते समय में हो चुका है, उसे भूतकाल कहते है। जैसे – अमन हैदराबाद गया था।

(घ) क्रिया के जिस रूप से काम के आने वाले समय में होने का पता चलता है, उसे भविष्य काल कहते जैसे – राहुल आगरा जाएगा।

(2) (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗

(3) (क) सामान्य भूतकाल (ख) पूर्ण भूतकाल (ग) संदिग्ध भूतकाल (घ) सामान्य भविष्यत् (ङ) संभाव्य भविष्यत् (च) अपूर्ण वर्तमान (छ) सामान्य वर्तमान

(4) (क) भूतकाल – अपूर्ण भूतकाल (ख) भविष्यत् काल – संभाव्य भविष्यत् काल
(ग) भविष्यत् काल – सामान्य भविष्यत् काल (घ) भूतकाल – सामान्य भूतकाल
(ङ) भविष्यत् काल – सामान्य भविष्यत् काल (च) भविष्यत् काल – संभाव्य भविष्यत् काल
(छ.) भूतकाल – सामान्य भूतकाल

(5) (क) वह सो रहा है। वह सो रहा होगा।
(ख) वह घर जाता है। वह घर जाएगा।

पाठ 16 वाच्य

(1) (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗

(2) (क) रमा से दूध पिया जा रहा है। (ख) धोबी से कपड़े धोए जा रहे हैं।
(ग) कर्मवाच्य और भाववाच्य में अंतर स्पष्ट किया जाए। (घ) बालक के द्वारा पत्र लिखा जाता हैं।
(ङ) रमेश के द्वारा चित्र बनाया गया।

(3) (क) क्या समर से लिखा जाएगा। (ख) पक्षियों से उड़ा नहीं जाता । (ग) बच्चों से पढ़ा नहीं जाता।
(घ) रोगी से खाया नहीं जाता। (ङ) सत्येंद्र से आया नहीं जाएगा।

(4) (क) क्रिया के जिस रूप से पता चले कि उसका प्रयोग कर्ता, कर्म या भाव के अनुसार हुआ हैं, उसे वाच्च कहते हैं।
(ख) वाच्य के तीन भेद हैं।– (क) कर्तृवाच्य (ख) कर्मवाच्य और (ग) भाववाच्य

(5) (क) जब वाक्य में क्रिया के लिंग, पुरुष और वचन कर्ता के अनुसार होते हैं, तब उस क्रिया को कर्तृवाच्य कहते हैं। जैसे –प्रेरणा दौड़ रही है। बच्चे पुस्तक पढ़ रहे हैं। इन वाक्यों में आए क्रिया पद दौड़ रही है और पढ़ रहे हैं। कर्ता के लिए लिंग, वचन, के अनुसार प्रयोग किए गए हैं अत: ये कर्तृवाच्च हैं।

(ख) जब वाक्य में क्रिया के लिंग, पुरुष और वचन कर्म के अनुसार होते हैं तो वह क्रिया कर्मवाच्य कहलाती है। जो क्रिया कर्ता या कर्म के अनुसार न होकर भाव के अनुसार होती है, उसे भाववाच्य कहते हैं। उदाहरण–

कर्मवाच्य	**भाववाच्य**
मनोज से गीत गाया गया है।	बूढ़े से चला नहीं जाता।
अंशु से पुस्तक पढ़ी जा रही है।	प्रशांत से सोया जाता है।
(क्रियाएँ कर्म के अनुसार हैं)	(क्रियाएँ भाव के अनुसार हैं)

पाठ 17 अव्यय

क. क्रियाविशेषण

(1) (क) स्थानवाचक (ख) रीतिवाचक (ग) कालवाचक

(2) (क) उधर – स्थानवाचक (ख) रातभर – कालवाचक (ग) तेज – परिमाणवाचक
(घ) बहुत – परिमाणवाचक (ङ) जल्दी–जल्दी – रीतिवाचक (च) थोड़ा – परिमाणवाचक

(3)

शब्द	–	**विशेषण**	–	**क्रियाविशेषण**
आस पास	–	घर के आस–पास पेड़ है।	–	पृथ्वी सूर्य के आस पास घूम रही है।
अचानक	–	अचानक बारिश शुरू हो गई	–	लिफ्ट अचानक रूक गई।
कम	–	नमक कम है।	–	कम खाओ
अच्छा	–	टमाटर अच्छे हैं।	–	सब्जी अच्छी बनी है।

(4) (क) अव्यय वे शब्द हैं जिनके वाक्य में प्रयोग होने पर लिंग, वचन, पुरुष, काल, वाच्य आदि के प्रभाव से कोई परिवर्तन नहीं होता है। अव्यय का शाब्दिक अर्थ है– जिसका कुछ भी व्यय न हो। अर्थात ऐसे शब्द जिनका कुछ भी व्यय न हो। अर्थात ऐसे शब्द जिनका वाक्य में प्रयोग होने पर रूप न बदले।

(ख) जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, क्रिया विशेषण कहलाते हैं। जैसे– नेहा मधुर गाती है। यहाँ मधुर क्रिया से पहले आया है, यह शब्द क्रिया की विशेषता बता रहा है अत: क्रियाविशेषण है। क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं–

(क) कालवाचक क्रियाविशेषण (ख) स्थानवाचक क्रियाविशेषण
(ग) रीतिवाचक क्रियाविशेषण (घ) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

(ख) संबंधबोधाक

(1) (क) संबंधबोधक (ख) संबंधबोधक (ग) संबंधबोधक (घ) क्रियाविशेषण (ङ) संबंधबोधक

(2) (क) के बाद (ख) के बाहर (ग) के साथ (घ) की अपेक्षा (ड़) के नीचे

(3) (क) राम अपने पिता के विरुद्ध काम कर रहा है।
(ख) बद्री के यहाँ गाय है।
(ग) रमेश के संग नरेश आया।
(घ) पिता जी के लिए चाय बनाओं।
(ङ) घर के आगे पेड़ है।
(च) घर से लेकर स्टेशन तक दौड़ों।
(छ) गरमी के मारे बुरा हाल है।
(ज) धनीराम के पश्चात हरीराम आया।

(4) (क) बालक घर के बाहर है।
बालक बाहर बैठा है।

(ख) राम के निकट श्याम है।
राम श्याम के निकट आ गया।

(ग) वह पेड़ के नीचे बैठा है।
वह नीचे रहता है।

(घ) घर के भीतर जाओ।
भीतर चलो।

(5) ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होकर उसका संबंध वाक्य में अन्य संज्ञा, सर्वनाम शब्दों से बताते हैं, संबंधबोधक कहलाते है।

(6) क्रियाविशेषण शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं जबकि संबंधबोधाक शब्द संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से बताते हैं। जैसे- घोड़ा **तेज** भाग रहा है, में तेज क्रियाविशेषण है और मैं कल **दिनभर** घूमता रहा। में दिनभर संबंधबोधक हैं। संबंधबोधक संज्ञा या सर्वनाम के बाद आते हैं परंतु क्रियाविशेषण शब्द क्रिया से पहले आते हैं। जैसे- आयुष थोड़ा खा सकता है। (क्रियाविशेषण), तुम सामने देखो। (क्रियाविशेषण), स्कूल के सामने मंदिर हैं। (क्रियाविशेषण)

(ग) समुच्चयबोधक

(1)

	समुच्चयबोधाक	–	**भेद**
(क)	और	–	समानाधिकरण
(ख)	और	–	समानाधिकरण
(ग)	यदि, तो	–	व्यधिकरण
(घ)	परंतु	–	समानाधिकरण
(ङ)	तो	–	समानाधिकरण
(च)	ताकि	–	व्यधिकरण

(2) **समानधिकरणः**- और, इसलिए कि, एवं, जिससे कि, चूँकि, अतएवं, यद्यपि-तथापि, यानी, परिणामस्वरूप
व्यधिकरणः- ताकि, क्योंकि, अथवा, अन्यथा, बल्कि, फलतः, मानो, जो-तो

(3) (क) रमन ने काफी परिश्रम किया किंतु पास न हो सका।
(ख) राम तथा नमन घर चले गए हैं।
(ग) कमल स्कूल नहीं गया, क्योंकि वह बीमार था।
(घ) हमारे बड़े पापा यानी ताऊ जी आ रहे हैं।

(4) (क) दो शब्दों, दो वाक्य के अंशों या दो वाक्यों को जोड़ने वाले शब्दों को समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। जैसेः- कमल और विमल सहपाठी है।, तुम्हें लाल फूल चाहिए या पीला। यहाँ 'और' 'या' समुच्चयबोधक अव्यय हैं।
(ख) समुच्चयबोधक के दो भेद हैं- (क) समानाधिकरण समुच्चयबोधक (ख) व्यधिकरण समुच्चयबोधक

समानाधिकरण समुच्चयबोधक – जिन समुच्चयबोधक शब्दो द्वारा दो समान शब्दों, दो वाक्य के अंशो और दो वाक्यों को जोड़ा जाता है, उन्हे समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते है।
जैसे – रावण और विभीषण सगे भाई है।
व्यधिकरण समुच्चयबोधक – किसी प्रधान या अश्रित उपवाक्यों को जोड़ने वाले शब्दों को व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहते है। जैसे – वह गिर पड़ा क्योकि रास्ते में गड्ठा था।

भाषा-खेल

1.	वह बुरा आदमी है।	वह बुरा कर रहा है।	वर्तमान
2.	राम अच्छा आदमी है।	राम ने अच्छा किया।	वर्तमान
3.	नेहा का दिमाग तेज़ था।	नेहा तेज़ दौड़ी।	भूतकाल
4.	डाल पर सुंदर फूल खिला है।	रमा सुंदर नाच रही है।	वर्तमान
5.	वह सीधा बालक था।	वह सीधा चलता गया।	भूतकाल
6.	आम मीठा था।	राधा मीठा बोलती थी।	भूतकाल
7.	रानी अधिक मोटी हो गई है।	अधिक मत खा।	वर्तमान
8.	चाय में कम चीनी है।	भाई कम बोल।	वर्तमान

(घ) विस्मयादिबोधक

(1) (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗ (च) ✓

(2) **सावधान** – सावधान! आगे रास्ता खराब हैं।
शबाश!– शाबाश! भगवान तुम्हें कामयाब करे।
बाप-रे-बाप! – बाप-रे-बाप इतना गुस्सा।
अरे! – अरे! तुम कब आए।
वाह!– वाह! तुमने तो कमाल कर दिया।
हाय!– हाय! मैं कुछ नहीं कर पाया।
छिः! – छिः! कितनी गंदगी हैं।
सुंदर!– सुंदर! लगता है, ईश्वर ने अपने हाथों से बनाया है।

(3) (क) चेतावनी बोधक (ख) चेतावनी बोधक (ग) तिरस्कारबोधक
(घ) प्रशंसाबोधक (ङ) शोक बोधक (च) विस्मयबोधक
(छ) अनुमोदन बोधक

(4) (क) सावधान! (ख) हाय! (ग) छिः! (घ) शाबाश!

(5) वाक्य में जिस शब्द या पद से बोलने वाले या लिखने वाले के मन में विस्मय, हर्ष, शोक आदि के भाव प्रकट होते हैं, उन्हें विस्मादिबोधक कहते हैं। जैसे– वाह!, छिः!, अहा! आदि।

पाठ 18 सामान्य अशुद्धियाँ

(1) (क) आशीर्वाद (ख) राज्यभिषेक (ग) शृंखला (घ) ज्योत्स्ना (ङ) संन्यासी (च) कवयित्री
(छ) अंत्याक्षरी (ज) पर्याय

(2) दीवार, त्योहार, श्रीमती, शासन, अतिथि, योग, हानि, धरोहर, प्रण, निष्ठा, ऋण, घृणा, गृहस्थ, नयन, घंटा, संसद, नीरोग, गुंज, चिह्न, झूठ, शांति, योग्य, घनिष्ठ, पाँचवाँ, समुद्र, कनिष्ठ, पर्यत

पाठ 19 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) मुहावरे

(1) (क) पेट काटकर (ख) जी भर आता था
(ग) कमर सीधी कर लूँ (घ) तलवे चाट
(ङ) आँखों में धूल झोंकी (च) उल्लू बनाया

(छ) एक आँख से देखती (ज) करवटें बदलता

(झ) आँखें बिछाए बैठे (ञ) घाव पर नमक छिड़क

(2) (क) अति प्रिय – बच्चा माँ की आँखों का तारा होता हैं।

(ख) चुगली करना – रमेश हमेशा दूसरों के कान भरता रहता है।

(ग) उत्साह बढ़ाना – वीर माताएँ अपने पुत्रों की पीठ ठोककर उन्हें युद्ध में भेजती हैं।

(घ) स्वागत करना – प्रधानमंत्री के आने पर लोगों ने आँखें बिछा दी।

(ङ) मना करना – रमेश ने राकेश से रुपये माँगे पर उसने अगूँठा दिखा दिया।

(च) बाधा डालना – सुंमन को तो हर काम में टाँग अड़ाने की आदत है।

(3) (क) फूला न समाना (ख) आँखों में धूल झोंकना

(ग) ईद का चाँद होना (घ) चंपत होना

(ङ) खिल्ली उड़ाना (च) हाथ साफ़ करना

(छ) एड़ी–चोटी का जोर लगाना

(ख) लोकोक्तियाँ

(1)

थोथा चना बाजे घना	–	गुण कम, दिखावा अधिक
मान न मान मैं तेरा मेहमान	–	जबरदस्ती संबंध बनाना
काठ की हाँड़ी बार–बार नहीं चढ़ती	–	बेईमानी बार–बार नहीं चल सकती
पराधीन सपनेंहूँ सुख नाहीं	–	गुलामी में कभी चैन नहीं
न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी	–	किसी चीज को जड़ से नष्ट कर देना

(2) (क) ओछा आदमी बढ़ा चढ़ा कर अपनी प्रशंसा करता है। – रमा पाँचवी पास है लेकिन बोलती अंग्रेजी है। सच है अधजल गगरी छलकत जाए।

(ख) एकदम अनपढ़। – रजनी को कुछ भी नहीं आता, उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।

(ग) दोष अपना, धमकाए निर्दोष को। – मोहन तुमने अपनी किताब फाड़ दी, मुझे कहते हो कि किताब रखनी नहीं आती, यह तो वही बात हुई उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

(घ) दोषी खुद डरता हैं। – दुकान में चोरी होते ही नौकर भाग गया मैं समझ गया चोर की दाढ़ी में तिनका।

(ङ) अपने मुँह से स्वयं अपनी प्रंशसा करना। – दूसरा प्रशंसा करे तो ठीक, अपने मुँह तो कोई भी मियॉ मिट्ठू बन सकता है।

(3) (क) कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली। (ख) आम के आम गुठलियों के दाम।

(ग) तेते पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर (घ) अंधों में काना राजा

पाठ 20 वाक्य विचार

(1) (क) भावों और विचारों को प्रकट करने वाले व्यवस्थित शब्द–समूह को वाक्य कहते हैं। इसके दो अंग होते हैं– उद्देश्य और विधेय।

(ख) वाक्य में जिसके विषय में बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। जैसे:– प्रणव पढ़ रहा है। नेहा कपड़े धो रही हैं। यहाँ 'पढ़ रहा हैं' तथा 'कपड़े धो रही है' क्रमश: प्रणव तथा नेहा के विषय में कुछ बता रहे हैं। अत: प्रणव तथा नेहा उद्देश्य हैं।

(ग) वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ भी कहा जाता हैं, उसे सूचित करने वाले शब्द 'विधेय कहलाते हैं। जैसे:– प्रणव पढ़ रहा है।, नेहा कपड़े धो रही है। इन वाक्यो में 'पढ़ रहा हैं' तथा 'कपड़े धो रही है शब्द क्रमश: प्रणव तथा नेहा के यानी उद्देश्य के विषय में कुछ कह रहे हैं। अत: ये शब्द विधेय हैं।

(2) (क) सरल वाक्य (ख) मिश्रित वाक्य (ग) संयुक्त वाक्य (घ) मिश्र वाक्य

(3) (क) संकेतवाचक (ख) संकेतवाचक (ग) प्रश्नवाचक (घ) आज्ञावाचक (ङ) विस्मयवाचक (च) इच्छावाचक

(4) (क) इच्छावाचक (ख) संदेहवाचक (ग) संकेतवाचक (घ) प्रश्नवाचक (ङ) विस्मयवाचक (च) विधानवाचक

(5) (क) सरल वाक्य (ख) मिश्रित वाक्य (ग) मिश्रित वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य

(6) (क) वह स्कूल से आकर पढ़ने बैठ गया। (ख) नीता आकर फौरन वापिस चली गई।
(ग) मोहन के आते ही मदन चला गया। (घ) वह परीक्षा देकर पास हो गया।
(ङ) अध्यापक ने कक्षा में आकर पढ़ाना शुरू कर दिया।

(7) (क) शिक्षक कक्षा में आए और वे पढ़ाने लगे।
(ख) यह मेरी खरीदी हुई गाय है जो बहुत दूध देती है।
(ग) उन्होंने जो घर खरीदा था वह कल अचानक गिर पड़ा।

(8) (क) रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं:-
(क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) मिश्रित वाक्य

(ख) अर्थ के आधार पर वाक्यों के आठ भेद होते है।-
i. विधानवाचक ii. आज्ञावाचक iii. विस्मयवाचक iv. इच्छावाचक v. निषेधवाचक
vi. प्रश्नवाचक vii. संदेहवाचक viii. संकेतवाचक

भाषा-खेल

	उद्देश्य	विधेय
1.	मछलियाँ	जल में तैर रही हैं।
2.	दो बालक	गेंद से खेल रहे हैं।
3.	पिल्ला	दौड़ रहा है।
4.	खरगोश	गाजर खा रहा है।
5.	बकरी	घास चर रही है।
6.	फव्वारा	चल रहा है।
7.	दो आदमी	बैंच पर बैठकर बातें कर रहे हैं।
8.	पक्षी	पेड़ पर बैठे हैं।

पाठ 21 अनुच्छेदन लेखन

(1)

(क) पुस्तक मेला

हमारे देश में समय समय पर अनेक प्रकार के मेलों का आयोजन किया जाता हैं। इनमें पुस्तक मेला महत्वपूर्ण हैं। दिल्ली में वर्ष में एक बार प्रगति मैदान में पुस्तक मेले का आयोजन किया जाता है। इनमें देश के ही नहीं, विदेशों के प्रकाशक भी अपनी प्रकाशित पुस्तकों का प्रदर्शन करते हैं। पुस्तक मेले में लोग अपनी मनपसंद की पुस्तके खरीदते हैं। इसमें हर प्रकार की पुस्तकें आसानी से मिल जाती हैं। साथ ही इस अवसर पर विभिन्न प्रकाशक पुस्तकों पर भारी छूट भी देते हैं। इस प्रकार के मेले बहुत उपयोगी हैं। इसलिए ये मेले वर्ष में कई बार लगने चाहिए।

(ख) मेरा प्रिय खेल

आधुनिक युग में अनेक खेल प्रचलित हैं। सभी अपनी रूचि के अनुसार कोई न कोइ खेल अधिक पसंद करते हैं। मेरा प्रिय खेल है- क्रिकेट। यह बहुत लोकप्रिय और रोमांचक खेल है। इसे देखने के लिए दर्शकों की भीड़ उमड़ पड़ती हैं। जगह-जगह लोग दूरदर्शन पर इसका प्रसारण देखने जमा होते हैं। आते जाते लोग भी स्कोर जानने को उत्सुक रहते हैं। पहले पाँच दिवसीय मैच होते थे पर आजकल एक एक दिवसीय मैच बहुत लोकप्रिय हैं। मेरी इच्छा है कि मैं भी बड़ा होकर भारतीय क्रिकेट टीम का हिस्सा बनूँ और देश का नाम रोशन करूँ।

(ग) परोपकार

परोपकर मानव जीवन का एक सुंदर गुण है। प्रकृति हमें परोपकार का पाठ सिखाती हैं। सूर्य-प्रकाश व ताप, चंद्रमा-शीतलता, वृक्ष, छाया और फल प्रदान करते हैं। आदिकाल से परोपकार की बहुत महिमा हैं। देवताओं की रक्षा के लिए महर्षि दधीचि ने अपनी हड्डियाँ दान कर दीं। महात्मा गाँधी ने परोपकार के लिए प्राण न्यौछावर कर दिए, सुकरात ने जहर पिया और ईसा मसीह सूली पर चढ़ गए। परोपकार के लिए प्रकृति का आदर्श हमारे सामने हैं।- बृच्छ कबहुँ नहि फल भखै, नदी न संचै नीर। परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर।

(घ) पर्यटन का महत्व

मनुष्य जिज्ञासु प्रवृत्ति का प्राणी हैं। पर्यटन उसकी जिज्ञासाओं को पूरा करने का एक साधन है। पर्यटन का अर्थ हैं।- भ्रमण करना। देश-विदेश के अलग अलग भू-भागों का भ्रमण करके वहाँ के रहन-सहन रीति रिवाज की जानकारी प्राप्त करना ही पर्यटन है। पर्यटन मनुष्य को आनंद तो प्रदान करता ही है, उसके अनुभव एवं ज्ञान में भी वृद्धि करता हैं। इससे उसका दृष्टिकोण विस्तृत हो जाता हैं। वह नई-नई बातें सीखाता है। आज पर्यटन एक उद्योग के रूप में पनप चुका है। प्राचीन काल में पर्यटन का कार्य बहुत कठिन होता था, पर अब यह अत्यंत सुविधापूर्ण हो गया हैं। पर्यटन स्थलों पर अनेक सुविधाएँ उपलब्ध हैं और वहाँ पहुचने के अनेक साधन उपलब्ध हैं। पर्यटन का अपना ही आनंद है।

(ङ) भारत की ऋतुएँ

भारत में छः ऋतुएँ आती हैं।- ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेंमंत और बसंत। इन सब ऋतुओं का अपना अपना महत्व हैं। इनमें चार ऋतुएँ प्रमुख हैं। ग्रीष्म ऋतु अप्रैल से अक्टूबर तक चलती हैं। इस ऋतु में लू चलती हैं। मनुष्य और जीव जंतु गरमी से बेहाल हो जाते हैं। लोग वातानूकुलित कमरो में बैठते हैं और शीतल पेय जल का सेवन करते हैं। धरती की तपन को शांत करने वर्षा ऋतु आती हैं। वर्षा न होने से फसल नष्ट हो जाती हैं। अधिक वर्षा होने पर बाढ़ आने का भय रहता हैं। शरद ऋतु नवंबर से फरवरी तक रहती हैं। लोग गरम कपड़े पहनते हैं और गरम पदार्थ खाते हैं। सरदी समाप्त होते ही 15 फरवरी से 15 अप्रैल तक वसंत ऋतु रहती हैं। मौसम बहुत सुहावना होता हैं यह सब ऋतुओं में श्रेष्ठ हैं।

(च) मेरे जीवन का लक्ष्य

मनुष्य अपने भविष्य के बारे में तरह-तरह के सपने सँजोता हैं मैंने अपने जीवन के संबंध में एक सपना संजोया है और वह हैं-डॉक्टर बनने का मैंने यह व्यवसाय अधिक धन कमाने के उद्देश्य को लेकर नहीं चुना। मैं चाहता हुँ कि मैं बड़ा होकर एक ऐसा डॉक्टर बनूँ जो धन कमाने के साथ साथ मानव की सेवा को भी उतना ही महत्व दे। मैं अपने कार्य के कुछ घंटे उन निर्धन लोगों को अर्पित करूँ जो जीवन में अच्छी चिकित्सा नहीं करा पाते। अपने इस लक्ष्य प्राप्ति के लिए मुझे अपनी पढ़ाई पर बहुत अधिक ध्यान देना है क्योंकि डॉक्टरी शिक्षा के पाठ्यक्रम में प्रवेश पाना आसान नहीं होता।

पाठ 22 संवाद लेखन

(1) (क)

अमन	:	आज के इस मैच में भारत की जीत पक्की है।
रमन	:	हाँ, लगता तो यही है।
अमन	:	अगर धोनी ने अपनी पारी सही से खेली तो ही चमत्कार होगा।
रमन	:	देखना धोनी अच्छा ही खेलेगा।
अमन	:	अरे! देखो धोनी ने छक्का मारा।
रमन	:	अब तो कमाल होकर ही रहेगा।
अमन	:	तुम बिलकुल सही कहते हो।

(ख)

अनिल	:	हमारे स्कूल के पुस्तकालय में कल कुछ नई किताबें आ रही हैं।
अनुराग	:	हाँ, सुना तो मैंने भी है।
अनिल	:	मैं तो चाहता हूँ कहानियों की अच्छी किताबें आएँ।
अनुराग	:	कहानियाँ पढ़ना तो मुझे भी पसंद है।
अनिल	:	हमारे पुस्तकालय में कहानियों की बहुत सारी किताबें है। क्या तुमने इन सबको पढ़ा है?
अनुराग	:	हाँ, लगभग सबको पढ़ चुका हूँ।
अनिल	:	हमारा पुस्तकालय औरों से काफी बड़ा है।
अनुराग	:	और इसमें प्रत्येक विषय पर किताबें भी आसानी से मिल जाती हैं।

अनिल : तुमने बिलकुल सही कहा। चलो अब कक्षा में चलें।
अुनराग : ठीक है, चलो।

(ग) माता : मैं तो आज बहुत खुश हूँ।
पिता : हाँ, पुत्र के कक्षा में प्रथम आने पर खुशी तो होनी ही चाहिए।
माता : क्या आप खुश नहीं है?
पिता : यह कैसी बात की? भला मैं खुश क्यों न हों, मेरा भी तो पुत्र है। मैं भी बहुत खुश हूँ।
माता : मेरी तो इच्छा है कि मेरा बेटा खूब पढ़े और पढ़-लिखकर बड़ा अफसर बने।
पिता : देखना, हमारा बेटा एक दिन बड़ा अफसर ही बनेगा।
माता : भगवान करें आपकी बात सच ही।

(घ) अध्यापक : हमें पेंड़ों को काटना नहीं चाहिए। हमें नए पे
विद्यार्थी : पर क्यों, श्रीमान जी।
अध्यापक : क्योंकि पेड़ हमारे पर्यावरण को स्वच्छ बनाते हैं।
विद्यार्थी : पेड़ पर्यावरण को कैसे स्वच्छ बनाते हैं?
अध्यापक : पेड़ अशुद्ध हवा क्यों सोखकर वातावरण में शुद्ध व ताजा हवा मुक्त करते हैं।
विद्यार्थी : पेड़ वातावरण में ऑक्सीजन छोड़ते हैं न?
अध्यापक : हाँ, तुमने सही कहा। पेड़ हवा में ऑक्सीजन छोड़ते और कार्बन डाइआक्साइड को सोखते हैं।
विद्यार्थी : फिर तो हर पेड़ों को बिलकुल नहीं काटने देंगे और बड़ी संरचना में पेड़ लगाएँगे।
अध्यापक : शाबाश! तुमसे यही उम्मीद थी।

(ङ) ग्राहक : भाई, मैंने कल तुम्हारी दुकान से जो पैन खरीदा था वह खराब निकला?
दुकानदार : क्या खराबी निकली?
ग्राहक : उसकी लीड-चलाते ही टूट गई।
दुकानदार : ऐसा होना तो चाहिए नहीं। आपने पैन को पैक तो किया था।
ग्राहक : हाँ किया था, पर चलाकर नहीं देखा था।
दुकानदार : ठीक है, आप इस पैन को मुझे दीजिए और दूसरा पैन ले लीजिए।
ग्राहक : ठीक है, भाई! आपका धन्यवाद!

पाठ 23 डायरी लेखन

(1) **(क) कोई दर्शनीय स्थान-लाल किला**

लाल किला देखने की बड़ी इच्छा थी। अचानक रविवार को लाल किला जाने का कार्यक्रम बन गया। दिल्ली की प्राचीन इमारतों में से एक लाल किले को मुगल सम्राट शांहजहाँ ने बनवाया था। इसके विषय में बहुत लोगों से सुना था और अब स्वयं देखने की बहुत उत्सुकता थी। हम सुबह ही लाल किले पहुँचे। यमुना के दाएँ तट पर स्थित यह विशाल किला अब भी मौन खड़ा है। कई सौ वर्ष बीतने पर भी लाल किला वैसा ही रहा और वैसा ही है उसका वैभव। लाल किला कई वर्ग मील में फैला हुआ है। इसके दो मुख्य द्वार हैं। बीच के द्वार से हम अंदर पहुँचे तो लाल किले की आंतरिक शोभा बाहर के दृश्य से भी दुगुनी जान पड़ी। सबसे पहले जहाँ किसी समय में मुगलों का दरबार लगता था। यह दीवाने आम के नाम से जाना जाता हैं सामने ही शाहजहाँ का प्रसिद्ध सिंहासन तख्त-ए-ताउस रखा है। इसके दोनो ओर अद्वितीय चित्रकारी वाले मोर बने हैं। इसके हीरे मोती सब ब्रिटिश काल में निकाल लिए गए थे। कुछ ऐसे ही बड़े-बड़े हॉलो से

गुजरते हुए हम दिवाने-ए-खास पहुँचे । इसी तरह अनेक बारादारियों से होते हुए हम लाल किले की छत पर पहुँचे। यहाँ के सुंदर बाग-बगीचे आज भी मुगल-सम्राटों के उद्यान कला-प्रेम को दर्शाते हैं। लाल किले के भीतर बहुत से बरामदे बने हुए हैं। जिनकी दीवारों पर चित्रकारी की हुई है। मार्ग में ऐसे कई कक्ष आते हैं। जहाँ पर शाहजहाँ स्वयं निवास करते थे। कहीं उनकी बेगमों के हरम थे तो कहीं उनके स्नान व श्रृंगार कक्ष। कहीं कहीं सुंदर तालाब बने हैं। अब तो इन स्थानों के केवल चिह्न ही शेष हैं। संगमरमर में खुदे चित्र व बेलबूटे पुरातन कला के उत्कृष्ट नमूने हैं। अब लाल किले पर केंद्रीय सरकार का अधिकार है। इसके मुख्य द्वार पर प्रतिवर्ष 15 अगस्त को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। तिरंगे से लाल किले का सौंदर्य दुगुना हो जाता हैं। आजकल लाल किले के प्रांगण में कुछ कार्यालय बने हुए हैं। इसके गौरव की गाथा प्रकाश एवं ध्वनी द्वारा प्रदर्शित की जाती है जिसे देखने के लिए दूर दूर से लोग आते हैं। स्वतंत्र भारत में लाल किले का सम्मान कहीं अधिक बढ़ गया है। भारत की प्राचीन संस्कृति का जीता-जागता प्रतीक हैं। लाल किला की सैर कर हम यही कहेगें कि यह चिरस्थायी रहे।

(ख) पुरस्कार मिलने पर

मै नानी के घर छुट्टियों में उन सब से मिलने माँ के साथ गई थी। एक दिन बड़े मामा के साथ बैठ बातें करते हुए कुछ पुरानी यादें ताजा की जा रही थीं। मेरी उम्र कोई 17 वर्ष थी। मामा ने नाना की मृत्यु की घटना याद करते हुए अपने कुछ कठोर व कटु अनुभव बताए। इस घटना ने मेरे मन पर गहरा प्रभाव डाला और मैनें इसे एक कहानी का रूप दे दिया। हम छुट्टियाँ खत्म होने पर घर लौट आए। कुछ समय बाद एक पत्रिका में कहानी लेखन की प्रतियोगिता के विषय में पढ़कर मैंने अपनी कहानी को परिमार्जित कर प्रतियोगिता में भेज दिया और भूल गई। समय बीत गया। अचानक एक शाम सुस्ताकर उठी आंगन में गई तो एक पत्र पड़ा था। उठाया तो आश्चर्य हुआ अपना नाम देखकर। उत्सुकता से लिफाफा खोला पत्र पढ़कर खुशी का ठिकाना न रहा। मेरी कहानी को दूसरी पर रखा गया था। और मुझे 1500रु का पुरस्कार मिलने वाला था। मै उछल पड़ी। दिल बल्लियों उछलने लगा। परंतु इसे विश्वास करने के लिए पुनः पत्र पढ़ा। फिर घर पर सबको बताया।
पुरस्कार जानकी देवी कॉलेज में एक सप्ताह बाद मिलना था। मुश्किल से सप्ताह बिताया और निश्चित स्थान पर अपनी प्रिय सखी के साथ पहुँची। समारोह में औपचारिकताएँ पूरी होने पर कहानी प्रतियोगिता के पुस्कार वितरण की घोषणा की गई। प्रथम के पश्चात द्वितीय पुरस्कार ग्रहण कर माननीय अध्यक्ष का धन्यवाद कर हाथों में पुरस्कार को थामे तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कितना प्रसन्न कितना उत्साहित अनुभव कर रही थी। आज भी जब कभी जीवन के संघर्षमय निरुत्साह क्षणों में वह क्षण याद आता है तो फिर आत्मविश्वास से भर जाती हूँ।

(ग) सूर्यास्त के दृश्य पर

सूर्यास्त के समय अक्सर मेरा ध्यान सूर्य की ओर चला जाता हैं। संतरी रंग का आग का बड़ा-सा गोला निरंतर नीचे को जाता बड़ा ही सुंदर लगता है। मुझे कितने ही लोगों ने टोका "उगते सूरज को देखते हैं, डूबते को नही" मुझे यह बात कभी पसंद नहीं आई दिन भर के थके सूर्य को विश्राम के लिए घर लौटने की कितनी जल्दी होती हैं। यह मैनें महसूस किया हैं। उसके साथ ही जागने वाले पक्षियों के भी दिनभर की मेहनत के पश्चात घर की ओर लौटने का संकेत मिलता हैं। दिनभर की हलचल जरा सी थम जाती है। थकान के बाद भी हर एक के भीतर घर लौटने का अलग ही उत्साह होता हैं। धूप ऊपर ही ऊपर रह जाती है। घर में बैठे प्राणी बाहर से आने वालों की प्रतीक्षा में घरों के बाहर, आंगन में छतों पर, चबूतरों पर घर की खिड़कियों पर आँखें बिछाए दिखते हैं।

(घ) किसी अद्भुत घटना पर

आज सुबह से ही हल्का-हल्का बूँदा-बाँदी हो रही थी। रिम-झिम का मौसम मेरा प्रिय मौसम रहा है। आज बारिश का आनंद लेते हुए मुझे पुरानी एक घटना याद आ गई। मैं दूसरी कक्षा में पढ़ती थी। माता-पिता की एकलौती संतान होने के कारण मुझे लेकर माँ बहुत भावुक थीं। उस दिन भी स्कूल से निकलते ही बारिश

शुरु हो गई। कुछ दूर गए कि एक पेड़ नजर आया। मेरे साथी ने रुकने के लिए कहा ताकि पुस्तकें गीली न हों। रुकने के बाद बरसात थी कि झमाझम बरसने लगी। बैग हमने पेड़ के कोटर में रखे और खेलने लगे। दो घंटे के करीब बीत गए। तभी ध्यान आया घर जाने का पानी घुटनों तक भर चुका था। तभी सामने के घर से एक व्यक्ति आया और उसने हमें बताया कि उसकी मालकिन ने हमें बुलाया है। हम बैग उठा उसके पीछे-पीछे चल दिए। आँटी ने हमें तौलिया दिया सिर पोछने को। बैग खुलवाकर रखे। खाने के लिए बिस्किट दिए जिसके लिए मैंने सख्त मना कर दिया। मेरी माँ ने मुझे कहा था किसी से कुछ लेकर नहीं खाना। जल्दी ही बरसात रुक गई। बैग संभाले। आँटी ने नौकर से हमें छोड़कर आने को कहा। बाहर निकले ही थे कि हमारे माताएँ हमें खोजते हुए, घबराई हुई सी आ रही थीं। उन्होंने अपने-अपने बच्चों को सीने से लगाकर प्यार किया। आँटी को धन्यवाद करने का नौकर से कहकर हम घर को चल दिए। घर पहुँचकर माँ ने मुझे सीने से लगाया और बहुत रोई। उनके आँसू देख मुझे अपराध बोध हुआ। समझ में आया कुछ गलत हुआ हैं। माँ ने समझाया-भीगते हुए ही आ जाते, इतनी देर में तो मेरी जान ही निकली जा रही थी। बेटा! स्कूल से सीधा घर आया करो।

(ङ) परिवार का एक समारोह

आज मेरे चाचा के बेटे का जन्मदिन था। सुबह से ही घर में रौनक थी। शाम के समय एक छोटे से परिवारिक समारोह का आयोजन किया गया था। सब सुबह से ही तैयारियों में जुटे थे पापा और चाचा सजावट में लगे थे। माँ दादी और चाची खाने-पीने की बढ़िया-बढ़िया चीजों की तैयारी में जुटी थी। मुझे सोचकर ही बहुत अच्छा लग रहा था कितना आनंद आएगा। सब इक्ट्ठे होंगे। बुआ का परिवार भी आएगा। शाम का नियत समय आ ही गया था। बुआ का परिवार और अन्य निमंत्रित सदस्य आने शुरू हो गए थे। घर सजकर अति सुंदर लग रहा था। नन्हा चिंटू-बर्थडे बॉय सजा धजा यहाँ वहाँ उछल रहा था। सबके आ जाने पर केक काटा गया। चिंटू भोला-भाला बहुत प्यारा लग रहा था। तस्वीरें ली गईं। ढेरों उपहार चिंटू को मिले। फिर बढ़िया पकवानों का आनंद सबने लिया और उनकी प्रशंसा की। दादी, माँ और चाची तारीफ सुन फूली नहीं समा रही थीं। मैंने जी भर मिठाई खाई। गुब्बारों से खेलें सब बच्चे प्रसन्न थे। पूरा परिवार इकट्ठा देख दादा जी खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। आज का दिन बहुत सूखद रहा। चिंटू की शुभकामनाएँ दे कर सबने विदा ली। अब थकान का अनुभव हो रहा है।

(च) अध्यापिका के द्वारा समझाया जाना

कल मुझे मेरी कक्षा की अध्यापिका ने स्टाफ रूम में आने को कहा। मन में घबराहट हो रही थी कि डाँट पड़ेगी, न जाने क्या गलती हो गई है। स्टाफ रूम में पहुँचा निर्मल मैडम ने मुझे बिठाया और बड़े ही प्यार से कहा-तुम्हें कुछ समझाना चाहती हूँ। मुझे पता चला है कि आजकल तुम्हारी मित्रता कक्षा के कुछ ऐसे बच्चों से हो गई हैं जो पढ़ाई में लापरवाह और शैतानियों में सबसे तेज़ है। तुम्हारा भी दिमाग शैतानियों में सबसे तेज हैं तुम्हारा भी दिमाग शैतानियों में लग रहा है। तुम कक्षा के एक होनहार विद्यार्थी हो। हम नहीं चाहते तुम्हारे भविष्य पर बुरा असर पड़े। इन सब चीजों में आनंद तो आता है पर, बाद में पिछड़ जाने पर दु:ख होता है। इसलिए इनसे दूर रहो। अपना ध्यान पढ़ाई की ओर से ध्यान हटने मत दो। तुम तो खेलकूद में भी अच्छे हो ऐसी मित्रता से बचो। बेटा तुम्हीं लोगों पर देश का भविष्य निर्भर है। बस इतना ही कहना था। मैनें उन्हें आश्वासन दिया। भविष्य में ऐसा नहीं होगा। मैं सही मार्ग पर चलूगाँ गलती के लिए क्षमा-याचना की उन्होंने मुझे आर्शीवाद दिया। अब मैं अपनी अध्यापिका को निराश नहीं करूँगा, अच्छा बनकर दिखाउगा यह प्रण किया। ईश्वर मेरी रक्षा करें।

पाठ 24 अपठित गद्यांश

(1) (क) सुबह होने का संकेत हमारे लिए सूर्य लाता है। वह अपने प्रकाश से सबको सुबह होने का आभास देता है।

(ख) इस अग्नि के गोले से मनुष्य व पशु-पक्षी ऊर्जा प्राप्त करते हैं। सूर्य ऊर्जा और प्रकाश का स्रोत है। यही ऊर्जा उन्हें दिन भर उत्साहित रखती है और वे अपने अपने जीविको-पार्जन में लग जाते हैं।

(ग) सूर्य की ऊर्जा उसकी गरमी से ही अनाज अंकुरित होते व पकते हैं। वृक्ष इसी गरमी से पुष्पित व फलित होते हैं। विभिन्न प्रकार का रसास्वादन हमें विभिन्न अनाजों व फलों से होता है और हमारी क्षुधा शांत होती है।

(घ) इस अग्नि-गोले का निर्माता वही अदृश्य शक्ति हैं जो सारे विश्व को नियंत्रित किए हुए हैं

(ङ) इस निर्माता को सतत् प्रणाम इसलिए कहा गया है क्योंकि उसने हमें सुंदर प्राकृतिक सौंदर्य उपहार के रूप में दिया है।

(च) इसका शीर्षक अग्निगोलक उचित प्रतीत होता है।

(2) (क) हिरण्यकशिपु की बहन होलिका को आग में न जलने का वरदान प्राप्त था। इसलिए हिरण्यकशिपु ने अपने पुत्र प्रहलाद को मारने के लिए होलिका की मदद चाही। वह अपने भाई का आग्रह मान कर प्रहलाद को गोद में लेकर जलती आग में बैठ गई। किंतु होलिका भस्म हो गई और प्रह्लाद प्रभु-कृपा से बच गया। यही पौराणिक कथा प्रसिद्ध है होली के संबंध में।

(ख) हिरण्यकशिपु ब्रह्माजी का वरदान पाकर अहंकारी हो गया था। वह ईश्वर विरोधी था और नहीं चाहता था की उसका पुत्र प्रह्लाद ईश्वर-भक्ति करे। उसने उसे बहुत समझाया परंतु प्रह्लाद ने ईश्वर-भक्ति नहीं छोड़ी। उसकी ईश्वर में आस्था के कारण ही हिरण्यकशिपु उसे मारना चाहता था।

(ग) होलिका को आग में न जलने का वरदान प्राप्त था। इसलिए वह अपने भाई हिरण्यकशिपु का आग्रह मान कर प्रह्लाद को मारने के लिए जलती आग में बैठ गई। परंतु होलिका जल गई और प्र लाद ईश्वर-कृपा से बच गया।

(घ) होली

(3) (क) खेलने से स्वास्थ्य तो ठीक रहता ही है, साथ ही मनुष्य अनेक ऐसे गुणों को सीखता है, जिनका जीवन में विशेष महत्व है। सहयोग से काम करना, विजयी होने पर अभिमान न करना, हार जाने पर साहस न छोड़ना, नियम पालन करना आदि गुण अनायास ही सीख जाते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि खेलने से समय नष्ट नहीं होता है।

(ख) स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए व्यायम तो उत्तम है ही किंतु खेल कूद से अनेक गुण अनायास ही सीखने को मिलते हैं। अभिमान न करना, हार जाने पर साहस बनाये रखना और लक्ष्य पाने के लिए नियमपूर्वक चलना आदि गुण खेलकूद से अनायास ही सीखने को मिलते हैं।

(ग) अच्छा खिलाड़ी वह है जो हारने पर भी साहस नहीं छोड़ता और निरंतर प्रयासरत रहता है लक्ष्य पाने के लिए वह हार से सीखता है और जीत की ओर बढ़ता है।

(घ) खेल में असफल होने पर भी साहस न छोड़ें अपने धैर्य को पाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहें। असफलता सफलता सीढ़ी है।

(ङ) खेलकूद का महत्व

पाठ 25 कहानी लेखन

(1) (क) एक गाँव में एक बूढ़ा किसान रहता था। उसके चार जवान हट्टे-कट्टे बेटे थे। चारों बेटे आलसी थे। उसकी मदद एक भी न करता था। आलसी बेटों के भविष्य की चिंता में किसान बीमार पड़ गया। एक दिन उसने अपने बेटों को बुलाकर कहा- प्यारे बच्चों! मेरा अंतिम समय आ गया है मैनें अपनी सारी कमाई खेत में गाड़ रखी है। मेरी मृत्यु के पश्चात् तुम खेत खोदकर उसे निकाल कर बाँट लेना। कुछ समय बाद किसान की मृत्यु हो गई। अंतिम संस्कार के बाद चारों बेटों ने खेत खोदना शुरू कर दिया। सारा खेत खोद डालने पर भी उन्हें कुछ नही मिला। थक कर चारों निराश हो खेत के किनारे बैठ गए। एक बुढ़िया उधर से निकली तो उन्हें उदास देख कारण पूछा। लड़कों ने अपने पिता की धन वाली झूठी बात बता दी। बुढ़िया ने सलाह दी कोई बात नहीं खेत तो तुमने

खोद ही रखा है अब इसमें बीज डाल दो बुढ़िया की बात मान उन्होंने खेत में बीज बो दिए और देख-रेख करने लगे। समय आने पर लहलहाती फसल देख चारों भाई खुशी से फूले नहीं समाते थे। अब उन्हें अपने पिता की बात मूल अर्थ समझ में आया कि यही खेत में गड़ा धन था। अब वे जान गए थे कि बिना परिश्रम सफलता नहीं।

(ख) एक स्त्री को संतान नहीं हुई तो उसने किसी और के बच्चे को चुराने की ठान ली। मौका देखकर उसने किसी दूसरी औरत के बच्चे को उठा लिया। बच्चे की असली माँ द्वारा रिपोर्ट लिखाने पर वह स्त्री पकड़ी गई उन्हें न्याय के लिए राजा के पास ले जाया गया। राजा के समक्ष दोनों ने बच्चे को अपना बताया। राजा ने कहा दोनों को बच्चे के टुकड़े कर आधा-आधा दे दिया जाए। यह सुनते ही असली माँ बिलख पड़ी और उसने कहा बच्चे के टुकड़े न करें उसे ही दे दे। यह सुनते ही राजा सत्य को जान गया। असली माँ को बच्चा सौंप दिया गया और दुसरी स्त्री का दंड दिया गया। इसलिए कहा जाता है सच्चाई की हमेशा जीत होती है।

(ग) एक बार बादशाह अकबर के दरबार में एक शिकायत आई चोरी की। चोर की तालाश कैसे की जाए उसका कोई अता-पता, कोई भी सुराग नहीं था। बादशाह ने बीरबल से बातचीत की और समस्या का हल खोजने के लिए कहा। बीरबल ने एक दिन की मोहलत माँगी। अगले दिन दरबार लगने पर बादशाह ने बीरबल से जवाब माँगा। बीरबल ने कहा हुजूर चोर अभी पकड़ा जाएगा। वह यहीं है और उसकी दाढ़ी में तिनका है। चोर घबरा गया और वह अपनी दाढ़ी में हाथ फेर कर तिनका खोजने लगा। तभी बीरबल ने सैनिक को उसे पकड़ के लाने को कहा। चोर ने गुनाह कबूल किया और बादशाह ने बीरबल को ईनाम दिया। इस पर अपनी सूझबूझ से बीरबल ने सलरता पूर्वक चोर को पकड़वा दिया ।

(2) एक लोमड़ी और सारस की दोस्ती हो गई। एक बार लोमड़ी ने सारस को अपने घर दावत का निमंत्रण दिया। सारस ने निमंत्रण स्वीकार किया और निश्चित समय पर लोमड़ी के घर पहुँच गया। लोमड़ी ने दो चौड़ी थालियों में दूध परोसा। लोमड़ी तो जीभ से फटाफट दूध चट कर गई परंतु सारस अपनी लंबी चोंच के कारण दूध नहीं पी सका। उसे भूखा ही रखना ही पड़ा। सारस ने अपने अपमान का बदला लेने की ठानी। उसने भी लोमड़ी को अपने घर भोजन का निमंत्रण दिया। लोमड़ी निमंत्रण स्वीकार कर सही समय पर पहुँच गई। सारस ने खीर बनाई परंतु दो सुराहियो में खीर परोसा। सारस अपनी लंबी चोंच से खीर खाकर तृप्त हो गया परंतु लोमड़ी की पहुँच से खीर बाहर थी। उसे भूखा ही रहना पड़ा।

(3) एक गाँव में एक गड़रिया रहता था। एक रात वह चिल्लाने लगा बाघ आया, बाघ आया। गाँव वाले सुनकर उसकी मदद के लिए अपने-अपने घरों से भाग कर आए। जब देखा तो वहाँ कोई बाघ नहीं था। गड़रिया जोर-जोर से हँसने लगा। एक दो बार फिर गड़रिए ने इसी प्रकार झूठा शोर मचाया और गाँव वालों को बेवकूफ बनाया। एकदिन मैं अचानक सचमुच का बाघ आ गया। गड़रिया बहुत चिल्लाया परंतु कोई उसे बचाने नही आया और बाघ उसे मारकर खा गया। झूठ विश्वास खो देता है। शिक्षा- हमें कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए।

पाठ 26 निबंध लेखन

(1) **(क) गणतंत्र दिवस**

गणतंत्र दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है। यह पर्व प्रति वर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है। 1950 को स्वतंत्र भारत का संविधान लागू हुआ था। तब से इसे भारत के सभी धर्मों और जातियों के लोग उत्साह पूर्वक मनाते हैं। गणतंत्र दिवस के एक दिन पहले शाम को राष्ट्रपति देश के नाम संदेश देते हैं। इस दिन का समारोह देश के सभी भागों में धूमधाम से मनाया जाता है। दिल्ली में इस समारोह की शोभा निराली होती है। गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति भवन से लाल किले तक एक विशेष परेड का आयोजन किया जाता है। इस परेड का मुख्य आकर्षण इंडिया गेट पर होता है। लाखों लोग इस उत्सव को देखने के लिए एकत्र होते हैं। इस अवसर पर देश-विदेश के गणमान्य व्यक्तियों को आंमत्रित किया जाता है। सबसे पहले राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है तथा राष्ट्रगान होता हैं। फिर सेना के तीनों अंग तथा पुलिस दल राष्ट्रपति को सलामी देते हुए निकलते हैं। इस अवसर पर अस्त्र-शस्त्र, तोप, मिसाइलों आदि का प्रदर्शन भी किया जाता है

इसके बाद विभिन्न वायु सेना के विमान तिरंगे झंडे़ के तीन रंग छोड़ते हुए उड़ान भरते हैं। रात्रि के समय सरकारी भवनों व राष्ट्रपति भवन पर रोशनी की जाती हैं। लाल किले में कवि सम्मेलन किया जाता हैं। आज भारत स्वतंत्र हैं। हमारा अपना शासन है और अपनी सरकार है। हमें उन वीर सपूतों को नहीं भूलना चाहिए, जिन्होंने अपना बलिदान देकर हमें आजादी दिलाई।

(ख) वसंत ऋतु

भारत में छः ऋतुएँ आती हैं।- ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेंमत और वसंत। इन सब ऋतुओं का अपना अपना महत्व है। इसलिए इस ऋत को ऋतुराज कहते हैं। सरदी समाप्त होते ही 15 फरवरी से इस ऋतु का आगमन होने लगता है। यह ऋतु 15 अप्रैल तक चलती है। चारों ओर फूल ही फूल दिखाई देते हैं। यह ऋतु जिंदगी में उमंगे और तरंगे भरती हैं। वसंत ऋतु जहाँ एक सुहावनी ऋतु है, वहाँ उत्सवों के लिए भी प्रसिद्ध है। इस ऋतु में सरस्वती पूजन होता हैं। इसमें होली और वसंत पंचमी के पर्व मनाए जाते हैं। होली रंगो का त्यौहार है। यह प्रेम और भाईचारे को बढ़ाने वाला है। वसंत पंचमी के दिन लोग पीले रंग के वस्त्र पहनते हैं। घर घर पीले चावल, वसंती हलवा, और केसरिया खीर बनाईं जाती है। वसंत ऋतु किसानों के लिए एक उपहार है। इसमें फसलें लहलहा उठती हैं। खेतों की शोभा निराली होती हैं। इस ऋतु में मोर नाचता हैं, कोयल पंचम स्वर में गाती हैं। और तितलियाँ मँडराती है। नवजीवन का संचार होता है। शरीर बलशाली बनता हैं। वसंत ऋतु धरती वालों के लिए ईश्वरीय वरदान है। यह सब ऋतुओं में श्रेष्ठ हैं। यह हमें उत्साह, स्फूर्ति और ताज़गी देती है। यह स्वर्गीय आनंद देने वाली ऋतु है।

(ग) पुस्तकालय

पुस्तकालय शब्द दो शब्दों के योग से बना है। पुस्तक+आलय अर्थात पुस्तकों का घर। क्रमबद्ध पुस्तकों के रखने के स्थान को पुस्तकालय कहते हैं। इसका उपयोग पुस्तकाल के सदस्यों द्वारा किया जा सकता है। पुस्तकालय ज्ञान का भंडार है। पुस्तकालय व्यक्तिगत या सार्वजनिक हो सकते हैं। पुस्तकालय में अनेक दुर्लभ तथा बहुमूल्य पुस्तकें भी होती है। जिन्हें खरीदना प्रत्येक व्यक्ति के लिए संभव नहीं है। पुस्तकालय की बहुत उपयोगिता है। यह शिक्षा के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए सरकार को प्रत्येक गाँव व शहर में पुस्तकालय खोलने चाहिए। पुस्तकालय में अनेक प्रकार की पत्रिकाएँ भी उपलब्ध होती है। इनसे अवकाश का सदुपयोग हो जाता है। पुस्तकालय में बैठकर वहाँ शांत रह कर पुस्तकों को समय पर लौटाना, उन पर कुछ न लिखना, उनके पृष्ठ न फाड़ना आदि बातों का ध्यान रखना चाहिए। भारत जैसे गरीब देश में पुस्तकालय का विशेष महत्व है। पुस्तकालयों को बढ़ावा देने के लिए निजी संस्थाओं को आगे आना चाहिए। अज्ञान से ज्ञान की ओर जाने के लिए हमें पुस्तकालय में अध्ययन की आदत डालनी चाहिए।

(घ) पुस्तक मेला

हमारे देश में समय समय पर अनेक प्रकार के मेलों का आयोजन किया जाता है। देश में विभिन्न स्थानों पर ऐसे मेले का आयोजित होने लगे हैं। इनमें से कुछ सामाजिक कारणों से और कुछ धार्मिक कारणों के लिए आयोजित किए जाते हैं। भारत की राजधानी दिल्ली में वर्ष में एक बार प्रगति मैदान में पुस्तक मेले का आयोजन किया जाता है। इसमें देश के ही नहीं, विदेशों के प्रकाशक भी अपनी प्रकाशित पुस्तकों का प्रदर्शन करते हैं। इस साल के पुस्तक मेले में अनेक स्टॉल लगाए गए। भारत के मुख्य प्रकशकों के अतिरिक्त इसमें चीन, पाकिस्तान, जापान, नेपाल, इंग्लैंड, रूस और श्रीलंका के प्रकाशकों ने इसमें भाग लिया। पुस्तक मेले में दर्शकों की भारी भीड़ थी। लोग अपनी अपनी पसंद की पुस्तकें ढूँढ़ रहे थे और खरीदारी भी कर रहे थे। पुस्तक मेले मे पुस्तकें आसानी से मिल जाती है। साथ ही इस अवसर पर विभिन्न प्रकाशक पुस्तकों पर भारी छुट भी देते है। पुस्तक मेले में बच्चों से लेकर उच्च शिक्षा से संबंधित पुस्तकों का प्रदर्शन किया जाता है। इस प्रकार के मेलें बहुत उपयोगी हैं। इसलिए ये वर्ष में कई बार लगने चाहिए।

(ङ) बचपन के बीच

मनुष्य के जीवन में तीन मुख्य पढ़ान आते हैं- बचपन यौवन और बुढ़ापा। मनुष्य के जीवन के इन तीनों पड़ावों की अपनी विशेषता होती है। वह अपने प्रत्येक पड़ाव में कुछ खास अनुभव पाता है। इन तीनों पड़ावों में पहला पड़ाव बचपन का होता है जिससे वह संसार में आकर जीने की रीत को सीखना प्रारंभ करता है। बचपन के दिन उसके लिए इतने खास होते हैं कि वह अपने बपचन के दिनों को उम्र भर रहीं भूल पाता। जीवन के प्रत्येक काल में उसे बचपन के दिन याद आते रहते हैं। बचपन सब प्रकार की चिंताओं एवं जिम्मेदारियाँ से मुक्त होता है। उनमें बस दो ही काम भाते हैं, जी भरकर खाना-पीना और उछल-कूदकर खेलना। माता-पिता के मन को अपनी मोहक गतिविधियों से प्रसन्नता करना तथा उनका स्नेह पाना। उनसे अपनी माँगें मननाना आदि।

बचपन के दिनों में एक महत्वपूर्ण बात यह होती है कि इन दिनों में बालक जीवन भर काम आने वाले अच्छे संस्कार भी सीखता है। ये संस्कार जितने अच्छे से सीखे जाते हैं, बड़ा होने पर जीवन उतना ही सुखी तथा संपन्न होता है। अत: बचपन के दिनों का मनुष्य जीवन में विशेष स्थान एवं विशेष महत्व होता है।

(2) (क) मुंशी प्रेमचंद ने उर्दू साहित्य से हिंदी साहित्य में प्रवेश किया। उन्हें उपन्यास सम्राट के नाम से जाना जाता है। मुंशी प्रेमचंद्र का जन्म 31 जुलाई सन् 1880 को बनारस से चार मील दूर लमही गॉव में हुआ था। उनके पिता का नाम अजायब राय था। वें डाकखाने में मामूली नौकर थे। मुंशी प्रेमचंद का असली नाम धनपत था। आठ साल की उम्र में ही उन्होनें माता को खो दिया। पिता जी ने दुसरा विवाह कर लिया। जिससे बालक धनपत प्रेम व स्नेह से वंचित रह गया। घोर गरीबी झेलते हुए धनपत बड़े हुए। गरीबी, आभाव और प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी उनके साहित्य की ओर झुकाव को न रोक सकी। तेरह वर्ष की उम्र में ही उन्होंने लिखना प्रारंभ कर दिया। चौदह वर्ष की आयु में "होनेहार बिखान के चिकने-चिकने पात" नाटक लिख डाला। उन्होंने स्वयं एक बाल-विधवा से विवाह किया था। उन्होंने समाज को अपनी रचनाओं द्वारा दर्पण दिखाने का प्रयत्न किया था। उनकी कहानियाँ समाज की बुराइयों पर तीखा प्रहार थी। मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के एक मील के पत्थर हैं।

(ख) विवाह के समय कन्या पक्ष की ओर से वर-पक्ष को दिया गया धन या उपहार दहेज कहलाता है। भारत में वैदिक काल में यह प्रथा प्रचलित थी। इसका उद्देश्य केवल यह था कि जब तक लड़की नए घर के वातावरण से परिचित न हो तब तक वह उन वस्तुओं का उपयोग कर सके। आज यह हमारे समाज और संस्कृति के लिए कलंक है। घर में पुत्री का जन्म गरीब माता पिता के लिए समस्या लेकर आती है। कन्या के अच्छे वर के लिए धन की आवश्यकता प्रधान हो गई है। धन के आभाव में लड़की अविवाहित रह जाती है या अयोग्य हाथों में लड़की को सौंप दिया जाता है। दहेज न दे पाने अथवा कम दे पाने की स्थिति में कन्या को अपमानित होना पड़ता है और कन्या का जीवन भी कठिन हो जाता है। आए दिन समाचार पत्र में प्रकाशित नवविवाहिताओं द्वारा आत्महत्या जैसी दुर्घटनाओं के पीछे प्राय: दहेज की माँग ही कारण होता है। दहेज-प्रथा ने सामाजिक बुराई का रूप धारण कर लिया है। कई लोग इस कुप्रथा के कारण कन्या भ्रूण हत्या तक करवा देते है। समय समय पर इस विषय में कानून बनते हैं लेकिन परिणाम फिर भी शून्य ही देखे जा रहे हैं। इसके लिए जनजागरण और आंदोलन की आवश्कता है। दहेज प्रथा को रोकने के लिए दहेज निषेध अधिनियम पारित किया गया। फिर भी दहेज का लेन देन रूक नहीं सका। अधिनियम के अनुसार दहेज लेने या देने वाला व्यक्ति दंड का अधिकारी है। अब आवश्यकता यह है कि इस कानून को सख्ती से लागू किया जाए।

पाठ 27 पत्र लेखन

(1) बी- 40, गोल मार्किट
नई दिल्ली
प्रिय अमित
सप्रेम नमस्ते।

तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि 25 अगस्त को मैं अपनी छोटी बहन शिल्पा का जन्मदिन मना रहा हूँ। इस अवसर पर मैंने अपने सभी मित्रों को बुलाया है। सुबह 9 बजे हवन होगा। शाम को प्रीतिभोज तथा भजन-संध्या का आयोजन किया गया है। हम सब मित्र दोपहर को मनोरंजन कार्यक्रम करेंगे। इस शुभ अवसर पर मैं तुम्हें अपने माता-पिता के साथ आने का हार्दिक निमंत्रण भेज रहा हूँ। आशा है तुम इसे स्वीकार करोगे और आने का भरपूर प्रयास करोगे। शेष मिलने पर तुम्हारे आगमन की प्रतीक्षा में।

तुम्हारा मित्र

अनुभव

(2) जनसता,

बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002

दिनांक: 26-06-2016

संपादक महोदय,

महोदय,

आपके समाचार पत्र के माध्यम से वर्तमान बिजली संकट से उत्पन्न समस्याओं के बारे में अपने विचार संबंधित अधिकारियों तक पहुँचाना चाहता हूँ। आजकल कई-कई घंटो तक बिजली गुल रहती है। बिजली के न आने पर नलों में पानी भी नहीं आता है घरो में अनेक उपकरण काम नहीं करते। व्यापारिक प्रतिष्ठानों में कार्य ठीक ढंग से नही हो पाता। विद्यार्थी ठीक प्रकार से अध्ययन नहीं कर सकते बिजली की समस्या अनेक अन्य समस्याओं को जन्म देती है। मै चाहता हूँ कि आप इस पत्र को छापे ताकि संबंधित अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित हो। बिजली की आपूर्ति नियमित हो तथा जानता की कठिनाई दूर हो।

हरिमोहन (सचिव)

सधन्यवाद।

भवदीय

से-35, हरिनगर,

(3) सेवा में,

मुख्य डाकपाल

जी0 पी0 ओ0 गोल मार्किट

नई दिल्ली

दिनांक 26.06.2016

विषय- मोहल्ले में समय पर डाक न बाँटने की शिकायत।

महोदय,

मैं इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान अपने क्षेत्र की अव्यवस्थित डाक-प्रणाली की ओर दिलाना चाहता हुँ। यहाँ का डाकिया राम प्रसाद अत्यधिक लापरवाह है। वह कई दिनों की डाक एकत्रित हो जाने पर गली में खेलते बच्चों को दे जाता है। इमारतों में नीचे की सीढ़ियों पर छोड़ जाता है। इससे पत्र फट जाते हैं या उड़ जाते हैं। हमारी चिट्ठी किसी और के घर में डाल जाता है। तथा किसी और की चिट्ठी हमारे घर में। पत्र मिलने में देर होने से कभी किसी का साक्षात्कार छूट जाता है। तो कभी लिखित परीक्षा।

अत: आपसे अनुरोध है कि आप इस ओर ध्यान दें और समुचित डाक वितरण का प्रबंध करवाएँ। इस कृपा के लिए हम आपके आभारी रहेगें। धन्यवाद सहित।

भवदीय

राजन गुप्ता,

10-सी, गोल मार्किट, नई दिल्ली

प्रश्न पत्र 1

(1) (क) हिंदी (ख) रोमन (ग) व्याकरण (घ) गुरुमुखी

(2) उच्चारण महौषधि मनोकूल

(3) रचना या बनावट के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं– मूल या रूढ़ शब्द तथा व्युत्पन्न शब्द।

(4) अपमान, अपराध, अपशब्द उपकार, उपनाम, उपचार
परिपूर्ण, परिचय, परिजन

(5)

डाकगाड़ी	डाक के लिए गाड़ी	तत्पुरुष
धनहीन	धन से हीन	तत्पुरुष
पीतांबर	पीत है जो अंबर	कर्मधारय
सतसई	सात रूइयों का समूह	दविगु
लंबोदर	लंबा है उदर जिसका (गणेश)	बहुव्रीहि
राधा–कृष्ण	राधा और कृष्ण	द्वद्व
दशानन	दस हैं आसन जिसके (रावण)	बहुव्रीहि

(6) (क) जातिवाचक (ख) व्यक्तिवाचक (ग) भाववाचक (घ) व्यक्तिवाचक
(ङ) भाववाचक

(7) रानी गाय सेवक डिबिया श्रीमति

(8) वस्तुएँ चुहें वधुएँ तितिलियाँ चप्पलें

(9) वह आया था, लेकिन चला गया। मैंने आपको नहीं बल्कि उनको बुलाया था।
गणित तथा अंग्रेजी में प्रिय विषय हैं। वह स्कूल नहीं गई क्योंकि बीमार है।

(10)

	उद्देश्य	**विधेय**
(क)	वह	हॉकी खेलता है।
(ख)	अंकित	पतंग उड़ाता है।
(ग)	राम	खाना खा रहा है।
(घ)	राकेश के मामा जी	आए हैं।
(ङ)	वह	घर जा रहा है।
(च)	हिमालय	भारत के उत्तर पे स्थित है।

प्रश्न पत्र 2

(1)

बाग	बगीचा	उद्यान
रवि	भानु	सूर्य
धन	मेघ	जलधर
गगन	आसमान	अंबर

(2) (क) कृतज्ञ (ख) किसान (ग) साप्ताहिक (घ) सायं (ङ) जिज्ञासु

(3) सही अनाज
ऊपर दिया गया दूसरा

एक अस्त्र	तरफ
एक जानवर	दूसरा
समय	नक्षत्र
एक भाषा	घर

(4) (क) राम का भाई आया है। (ख) क्या आप चाय पिएँगे?

(ग) वाह! तुमने तो कमाल कर दिया। (घ) आप क्या चाहते हैं?

(ङ) रमा, श्यामा और चाचा जी आए हैं।

(5) साफ मना करना
बहुत प्यारा
वंश न चलना
क्रोध जताना

(6) अनीश्वर अनादर निरोग ठंडा रंक निराधार निर्यात नकद

(7) **समय का सदुपयोग**

इस संसार में समय ही वह वस्तु है जिसका कोई मूल्य नहीं अर्थात् समय अनमोल है। समय का सदुपयोग मनुष्य को निर्धन से धनी बना सकता है जबकि समय का दुरुपयोग मनुष्य को बर्बाद कर देती है। जो मनुष्य समय का मोल नहीं समझता और समय को बेकार में गँवा देता है वह अंत में पछताता है तथा सारा जीवन कष्ट उठाता है। विद्यार्थियों के लिए तो समय का और अधिक महत्व हैं। वे समय का सदुपयोग करके परीक्षा में सफल होकर जीवन में उन्नति का मार्ग परशस्त कर सकते हैं। अतः समय का हमेशा सदुपयोग कीजिए, इसे काफी बर्बाद मत कीजिए।

(8) 173-बी, मॉडल टॉउन
सोनीपत (हरियाणा)
प्रिय मित्र, नरेश
नमस्कार।

मैं यहाँ पर सकुशल हूँ तथा ईश्वर से आपकी तथा आपके परिवार की कुशलता की प्रार्थना करता हूँ। मित्र इस ग्रीष्मावकाश में मैंने अपने बड़े भाई के साथ शिमला भ्रमण का कार्यक्रम बनाया है। मेरी इच्छा है कि तुम भी हमारे साथ चलो तो बड़ा मजा आएगा। अतः तुम अपने माता-पिता से अनुमति लेकर मेरे घर पर आ जाओ और कुछ दिन हमारे साथ रहो। इस बीच हम शिमला भी घूम आएँगें। तुम अवश्य आ जाओ। चाचा-चाची को चरण-स्पर्श और राहुल को प्यार।

तुम्हारा मित्र
अनुराग